कथा सरिता

मन की शांति

जोशुआ लेवमेन तब नवयुवक ही थे। नये जोश की तरंग में एक दिन उनके मन में ख्याल आया कि क्यों न दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु प्राप्त की जाए, तभी तो जीवन की सफलता है। उन्होंने अपने चिन्तन से एक सूची तैयार की और उसमें स्वास्थ्य, सुयश, सम्पत्ति और शक्ति को दर्ज किया। उनके मत में यही दुनिया की सबसे मूल्यवान चीज़ें थी। बहुत दिनों तक वे इन चीज़ों को प्राप्त करने की कोशिश करते रहे। जब उनके उद्देश्य की सिद्धि प्रत्यक्ष नहीं हुई तो उन्होंने एक वृद्ध से सारा हाल कहा और वह सूची पेश की। उस वृद्ध ने युवक की उस सूची को ध्यान से देखा, कुछ समय के लिए वह एकदम मौन हो गये और फिर उसे उस अधूरी सूची पर हँसी आ गई। वृद्ध की हँसी और उसके हावभाव को देखकर वह युवक विस्मित हो गया और उसने वृद्ध से प्रश्न किया, ``क्या कोई ऐसी और चीज़ है जो सूची में शामिल करने योग्य है। युवक ने कहा, क्या आप बता सकते हैं कि मेरी सूची में क्या कमी रह गई है? वृद्ध ने कहा, हाँ इसमें कोई शक नहीं कि आपने बड़ी अच्छी सबसे महत्वपूर्ण चीज़ छोड़ दी है। युवक ने पूछा कि वह कौन सी चीज़ है? वृद्ध ने मुस्कुराकर उत्तर दिया -``मन की शान्ति।''

उसे पसंद है

सूफी संतो में एक बहुत बड़ी संत थीं - राबिया। वे निहायत सादगी की जिंदगी बितातीं और हर घड़ी अल्लाह का नाम उनकी जबान पर रहता। उनकी कुटिया में साधु-संतों और भक्तों का आना-जाना लगा रहता था। एक दिन एक संत आए और रात को उनकी कुटिया में ही रहे। उन्होने देखा, राबिया ने रात को अपने सोने के लिए एक टाट बिछाया और तकिये की जगह ईंट रख ली। वे अल्लाह का नाम लेती हुई बिस्तर पर आराम से लेट गईं, जरा-सी देर में ही गहरी नींद में सो गई। संत चकित रह गये, इतने ऊँचे दर्जे की संत और इतनी कठोर जिन्दगी। उन्हें बड़ा दुख हुआ और रात भर अपने बिस्तर पर पड़े छटपटाते रहे। एक पल को भी उनकी आंख नहीं लगी। सबेरे उठकर राबिया से कहा, `आप इतनी तकलीफ क्यों उठाती हैं?' `कैसी तकलीफ', राबिया ने पूछा। रात को संत ने जो देखा था, वह बता दिया। फिर बोले, `सुनिए, मेरे कई अमीर दोस्त हैं, अगर आपकी इजाजत हो तो मैं उनसे कहकर आपके लिए एक अच्छा-सा बिस्तर भिजवा दूं।' राबिया उनकी बात सुनकर चुप रही, फिर बोली, `तुम्हारी मोहब्बत के लिए क्या कहूं। पर यह तो बताओ कि मुझे, तुम्हें और अमीरों को देने वाला एक नहीं है?' संत ने दबी जबान से कहा, `हाँ, एक ही है।' तब राबिया बोली, `क्या वह हमें भूल गया है और दौलतमंदों की उसे याद है। अगर उसे हमारी याद नहीं तो हम क्यों याद दिलायें।' घड़ी भर खामोश रहकर उन्होने कहा, `मेरे भाई हमें यह पसंद है, क्योंकि उसे यह पसंद है।

अनोखी प्रतिभा

राजा भोज के दरबार में एक धनपाल नामक जैन पंडित थे। कहा जाता है कि वर्षों के अथक परिश्रम के बाद उन्होने उन्होने बाण रचित कादम्बरी का प्राकृत भाषा में अनुवाद किया था। जब वह पूरा हो गया तो राजा ने धनपाल से कहा, `इस ग्रंथ के साथ मेरा नाम जोड़ दो, तो यथेच्छ स्वर्ण मुद्राएं दूंगा।' धनपाल राजा के कर्मचारी थे, इसलिए वे दुविधा में पड़ गए। काफी सोच-विचार के पश्चात उन्होने नम्रता से राजा की बात मानने से इंकार कर दिया। अपना ही आश्रित पंडित ऐसी गुस्ताखी करे यह राजा को नागवार लगा और उन्होने आगबबूला होकर सारा अनुवाद जला दिया। यह घटना देखकर धनपाल को गहरा क्षोभ हुआ। इससे उनका खाना-पीना तक छूट गया। उन्हें यूं उदासीन देखकर उनकी पुत्री ने पूछा, `पिताजी, मैं काफी दिनों से देख रही हूँ कि आप किसी बात को लेकर शोकमग्न हैं? इस स्थिति का कारण क्या है मुझे तो बताइये? धनपाल ने सारा किस्सा सुना दिया। इस पर पुत्री बोली, `अरे, इसमें क्या है? आपकी पांडुलिपि अल्पविराम सहित मुखाग्र है मुझे। आप लिखिए, मैं बोलती जाती हूँ।' कादम्बारी प्राकृत भाषा में तैयार हो गई। पुत्री की इस अद्भुत शक्ति से धनपाल इतने मुग्ध हुए कि उसी के नाम पर उस पुस्तक का नाम `तिलक मंजरी' रख दिया।

परम धर्म

सामर्थ्य के अनुसार दूसरों की सहायता करना भारतीय संस्कृति का सकारात्मक दृष्टिकोण रहा है। यह पक्ष भी काफी प्रभावी रहा है कि विपत्ति के समय सभी एक जुट हो जाते हैं और दुःखी व याचक को तन, मन, धन से सहायता करते हैं। गांधीजी और गोपबंधु दास उड़ीसा में एक छोटे से स्टेशन पर गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहे थे कि एक वृद्ध आदिवासी आया और घुटने टेककर बापू के चरण छूने लगा। बापू उसे देखने लगे। उसने केवल लंगोटी पहन रखी थी, नंगी देह की पसलियां झलक रही थीं। कमर से उसने एक पैसा निकाला और बापू के पैरों के पास रख दिया। बापू की आंखें चमक उठीं। `यह पैसा क्यों रखा?' उन्होंने प्रश्न किया। `देव दर्शन हो जाते हैं तो कुछ भेंट चढ़ाने ले जाते हैं', वह बोला। गांधी ने पूछा, `क्या करूं इस पैसे का'? गरीब ने कहा, किसी गरीब को दे देना।' `ठीक' कहकर बापू ने पैसा ले लिया और पास बैठे उड़ीसा के समाज सेवक गोपबंधु दास से बोले, `यही भारतवर्ष की आत्मा है। यहाँ फटेहाल कंगाल भी अपने से गरीब की मदद करना अपना परम धर्म समझता है। इसका शरीर तो दुर्बल है, पर आत्मा बलवती है।'

राउरकेला-ओडिशा। 'राजयोग फॉर हेल्दी एंड हैप्पी लाइफ' विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए झारखण्ड की राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू, श्याम सुंदर पटनायक,वाइस चांसलर,बीजू पटनायक यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, ब्र.कु. बिमला, ब्र.कु. नथमल, ब्र.कु. ज्योत्सना, ब्र.कु. श्वेता व अन्य गणमान्य जन।

करहल-सैफयी(उ.प्र.)। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष मुलायम सिंह यादव को उनके जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. तेजस्विनी, ब्र.कु. नीतू व ब्र.कु. किरन।

ज्ञानसरोवर-माउण्ट आबू। विदेशी भाई बहनों के लिए आयोजित पीस ऑफ माइंड रिट्रीट के दौरान 'मेडिटेशन और आध्यात्मिकता' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. रामनाथ।

नेपाल-धंगाधी। आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में विश्व हिन्दू महासंघ के अध्यक्ष रामचंद्र अधिकारी, पूर्व अध्यक्ष दामोदर गौतम, हिन्दू विद्यापीठ के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. चिंतामणि योगी, ब्र.कु. हीरा, ब्र.कु. महेन्द्र व ब्र.कु. राजेश्वरी।

रादौर-हरियाणा। मुकन्दलाल कॉलेज में आयोजित एन.एन.एस. शिविर के दौरान 'तनावमुक्त' विषय पर प्रवचन के पश्चात् ब्र.कु. राज बहन व ब्र.कु. राजू को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए शिविर प्रभारी डॉ. अजायब सिंह व डॉ. ऋचा।

सम्बलपुर-ओडिशा। आमेर उत्सव कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु. पार्बती को आध्यात्मिक क्षेत्र में 45 वर्षों के उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित करते हुए सुरेश्वर मिश्रा,जिला कांग्रेस प्रेसिडेंट, अशोक बेरिहा व जयशंकर मिश्रा,कांग्रेस कमेटी सेक्रेट्री।